# 16 / 01 / 79 की अव्यक्त वाणी

## पर आधारित योग अनुभूति

### तिलक, ताजधारी और  तखतनशीन आत्मा की अनुभूति

➢➢ तिलकधारी आत्मा की अनुभूति

➳ _ ➳ इस देह से न्यारी मैं आत्मा हूं

→ अपनी श्रेष्ठ स्थिति के आसन पर विराजमान मैं बिंदी आत्मा हू

→ आतम स्मृति का यह तिलक मुझे परमातम वरदान में मिला है

→ इस देह अभिमान की धूल से परे मैं देही अभिमानी हूं

- हर प्रकार के आकर्षण से परे हूं
- हद के मेरे पन से दूर हूं
- यह विनाशी देह परमातम अमानत है
- इस अविनाशी तिलक द्वारा मैं आत्मा अविनाशी वरसे की हकदार हूं

➢➢ ताजधारी आत्मा की अनुभूति

➳ _ ➳ इस संगम युग पर बाबा ने मुझे आतम स्मृति का तिलक दे विश्व सेवा के ताजधारी बनाया है

→ अपने सर्व हद की जिम्मेदारियों का बोझ बाबा को सौप मैं बाप दादा के साथ विश्व सेवा की जिम्मेदारी उठाने वाली आत्मा हूं

→ हिम्मत के एक कदम से बाबा ने मुझे अनेक जन्मों के अनेक प्रकार के बोझ से छुड़ा दिया है

→ परमातम श्रीमत पर चलती मैं सर्व प्रकार के बोझ से मुक्त हूं

→ इस सहज मार्ग में सहज पुरुषार्थ से बाबा के साथ सहज ही हर कार्य संपन्न करती हूं

→ अपने श्रेष्ठ भाग्य और सर्व प्राप्तिओं  को प्राप्त कराने वाले बापदादा को सदा अपने सम्मुख देखती मैं शक्तिशाली आत्मा हूँ

- हर कार्य में बापदादा मेरे साथी हैं
- इस समर्थ स्टेज पर स्थित मैं आत्मा सदा परमात्मा मिलन के खेल में बिजी हूं
- हर संकल्प हर सेकंड स्वयं को ट्रस्टी समझ 'एक बाप ही मेरा है' इस बेहद के समर्थ संकल्प मे सिथत होती जा रही हूँ

➢➢ तखतनशीन आत्मा की अनुभूति

➳ _ ➳ तिलक और ताजधारी मै आत्मा बाबा की दिलतखतनशीन हूँ

→ बाबा की याद की गोदी मे बैठी मै सदा  ज्ञान रत्नों से खेलती हूँ

→ माया के  सर्व प्रकार के  बादलो से परे मै आत्मा परमधाम मे ज्ञान सूर्य के सम्मुख हूँ

- बाबा की किरणो रूपी छाया मे मै आत्मा सुख स्वरूप हू
- ज्ञान के तीसरे नेत्र द्वारा सवय को बाप समान अनुभव कर रही हूं
- जो बाबा के गुण वही मुझ आत्मा के गुण है
- जो बाबा का कर्तव्य वो ही मुझ आत्मा का  कर्तव्य है
- बाबा से मिलन मनाना और बाप समान बनना यही इस जीवन का लक्ष्य है